पठन स्तर २

संख्याओं का मेला

Author: Kavitha Mandana
Illustrator: Nirzara Verulkar
Translator: Deepa Tripathi

लीलू चौथी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ मेला देखने गयी। कुल मिलाकर छत्तीस छात्र!
सर बोले, “जिस किसी को छोटी रेलगाड़ी में घूमना हो वह अपना हाथ उठाए।”
सभी एक साथ चिल्लाए, “मैं. . . मैं, सर. . .मैं!”

इससे पहले कि छत्तीस के छत्तीस छात्र उसमें बैठ पाते,
छोटी रेलगाड़ी में बैठने की जगह ही नहीं बची।
फिर गाड़ी ने ज़ोर की सीटी मारी, और चल पड़ी।
चौथी कक्षा के बचे हुए विद्यार्थियों को अगले चक्कर
का इंतज़ार करना पड़ा।

इसके बाद बारी थी बड़े से पहिये जैसे गोल घूमने वाले झूले की सवारी की।
झूले में कर्इ डिब्बे थे और हरेक डिब्बे में दो लोगों के बैठने की जगह।
लीलू ने देखा कि एक टिकट दो लोगों के लिए है।

इससे पहले कि सर बच्चों की गिनती शुरू करते, लीलू ने झटपट
अपनी कक्षा के बच्चों को दो-दो की जोड़ियों में बाँट दिया-
“२, ४, ६, ८, १०, १२, १४, . . . ३६!”
टिकट वाले ने पूछा, “कितने टिकट हैं आपके?”
“१८,” लीलू ने जवाब दिया।

चक्कर वाले झूले पर हर एक घोड़े पर तीन-तीन लोग बैठ सकते हैं।

बिट्टू कक्षा के दूसरे बच्चों को जताना चाहता है कि वह कितना अक्लमंद हैं। इसलिए उसने तीन के गुणकों में गिनती शुरू की-

“३, ६, ९, . . . ३६!”

सर ने पूछा, “हमें कितने घोड़े चाहिएं?”

“१२,” बिट्टू ने सिर उठाकर जवाब दागा।

फिर दिन ढ़लने को आया। सब थक चुके थे। सर का सारा ध्यान इस बात में लगा था कि सभी छत्तीस के छत्तीस बच्चे बस में वापस लौट आयें। इस बार दीदू गिनती करना चाहती थी। उसने देखा कि बस में हर कतार में चार सीटें हैं। इसलिए उसने ऊँची आवाज़ में चार के गुणांकों में गिनना शुरू किया।

"४, ८, १२, १६, २०, २४, २८, ३२. . ."
'३६'. . .' की गिनती तक आते-आते वह ठहर गयी।

"सर, लगता है दो बच्चे अभी तक बस में नहीं लौटे हैं!"
उसने हाँफते हुए कहा।

बस के ड्राइवर, दीदू और सर ने सोते हुए बच्चों की फिर से गिनती की।
कौन छूट गया होगा?

“ओह! आओ, देखो न. . . . यहाँ एक बच्चा कम है,”
बस के पीछे के हिस्से से ड्राइवर ने कहा।
आख़िरी वाली एक सीट पर मोन्टू मिला- गहरी नींद में सोया पड़ा। खर्राटे ले रहा था!

लेकिन उसे मिला कर भी ३५ बच्चे ही हुए।
जैसे ही सर छूटे हुए बच्चे को खोजने निकले,
दीदू ने पुकारा, “सर, वापस आ जाइये, बच्ची मिल गयी है!”

“कौन शरारती बच्ची है वह?” सर ने नराज़गी के साथ पूछा।

दीदू ने अपनी ओर इशारा करते हुए कहा,

“मैं, सर! मैं ख़ुद को गिनना भूल गयी थी!”

अंकों का फेर :

दो, तीन या चार के गुणांकों में गिनती करने के लिए तुम्हें मेले में जाने की ज़रूरत नहीं है। हमारे हर ओर एक से ज़्यादा के समूहों में गिनती करने की संभावनाएँ मौजूद रहती हैं। जैसे, क्लास में मौजूद बच्चों के पैरों की गिनती दो-दो के गुणांकों में कर सकते हैं!
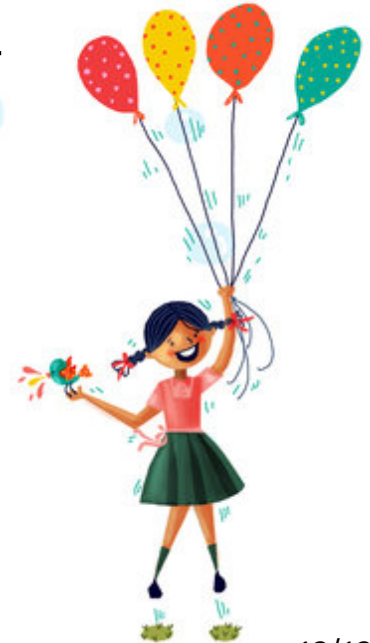
Story Attribution:

This story: संख्याओं का मेला is translated by Deepa Tripathi . The © for this translation lies with Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Maths at the Mela', by Kavitha Mandana . © Pratham Books , 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

''Maths at the Mela' has been published by Pratham Books. The development of this book has been supported by CISCO. www.prathambooks.org Guest Editor: Sudeshna Shome Ghosh

Images Attributions:

Cover page: Children at a fair, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Teacher talking to excited children, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Toy train and hands up in the air, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: A girl and a giant wheel, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Flowers and a giant wheel, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Boy popping peanuts into his mouth, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Some blue horses and a merry go round, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Children displaying various emotions, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Children having fun and a bus at the back, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Boy sleeping and man shouting, by Nirzara Verulkar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

CISCO A Corporate Social Responsibility Initiative

The development of this book has been supported by CISCO.

संख्याओं का मेला

(Hindi)

स्कूल की ओर से लीलू अपनी क्लास के छत्तीस बच्चों के साथ मेला देखने जाती है। लेकिन सर को बार-बार सभी बच्चों की गिनती करनी पड़ती है। कभी टिकट ख़रीदने के लिए, तो कभी यह देखने के लिए कि कहीं कोई खो तो नहीं गया। १, २, ३ . . . करके गिनने के बजाय क्या पूरे छत्तीस गिनने का कोई सरल तरीका है?

This is a Level 2 book for children who recognize familiar words and can read new words with help.